'देवनागरी' शब्द की व्युत्पत्ति

देवनागरी या **नागरी** नाम का प्रयोग "क्यों" प्रारंभ हुआ और इसका व्युत्पत्तिपरक प्रवृत्तिनिमित्त क्या था- यह अब तक पूर्णत: निश्चित नहीं है।

(क) 'नागर' अपभ्रंश या गुजराती "नागर" ब्राह्मणों से उसका संबंध बताया गया है। पर दृढ़ प्रमाण के अभाव में यह मत संदिग्ध है।

(ख) दक्षिण में इसका प्राचीन नाम "नंदिनागरी" था। हो सकता है "नंदिनागर" कोई स्थानसूचक हो और इस लिपि का उससे कुछ संबंध रहा हो।

(ग) यह भी हो सकता है कि "नागर" जन इसमें लिखा करते थे, अत: "नागरी" अभिधान पड़ा और जब संस्कृत के ग्रंथ भी इसमें लिखे जाने लगे तब "देवनागरी" भी कहा गया।

(घ) सांकेतिक चिह्नों या देवताओं की उपासना में प्रयुक्त त्रिकोण, चक्र आदि संकेतचिह्नों को "देवनागर" कहते थे। कालांतर में नाम के प्रथमाक्षरों का उनसे बोध होने लगा

देवनागरी की वैज्ञानिकता-

देवनागरी लिपि दुनिया की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि क्यों है।

ध्वन्यात्मक लिपि

यह एक ध्वन्यात्मक लिपि है अर्थात इसमें **जैसे बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है।** दूसरे शब्दों में इसके प्रत्येक अक्षर का जो नाम है वही उसका उच्चारण है। यथा 'क' का नाम व उच्चारण भी क है इत्यादि। जबकि अन्य लिपियों में ऐसा नहीं है। रोमन लिपि में अक्षर 'H' का नाम एच है, परंतु उच्चारण 'ह' होता है। '

एक अक्षर-एक उच्चारण

इस लिपि की दूसरी विशेषता यह है कि यहां किसी भी अक्षर का एक ही उच्चारण है और साथ ही एक उच्चारण के लिए एक ही अक्षर है। उदाहरण के लिए रोमन लिपि में 'व' के उच्चारण के लिए कभी 'V' का और कभी 'W' का अक्षरों का प्रयोग किया जाता है।

देवनागरी की वैज्ञानिकता-

मात्राओं द्वारा व्यंजनों का सुनिश्चित परिवर्तन

देवनागरी लिपि की एक अन्य विशेषता यह भी है कि इसमें व्यंजनों पर केवल मात्रा लगाने मात्र से उनका उच्चारण परिवर्तित हो जाता है, कोई अन्य अक्षर नहीं लिखना पड़ता है। साथ ही प्रत्येक मात्रा प्रत्येक व्यंजन के साथ सभी समय एक ही प्रकार का परिवर्तन हो जाता है, कोई अन्य अक्षर नहीं लिखना पड़ता है।

मूक अक्षर नहीं होते

देवनागरी लिपि में प्रत्येक अक्षर का उच्चारण होता है, कोई अक्षर उच्चारण विहीन नहीं होता है। रोमन लिपि में Light Bright में 'Gh' तथा Know व Knife में 'K' मूक अक्षर हैं। देवनागरी लिपि की ये चारों विशेषताएं तो वास्तव में सबसे गौण अर्थात सबसे कम महत्त्वपूर्ण विशेषताएं हैं।

देवनागरी की वैज्ञानिकता-

वर्ण की अवधारणा

भारतीय मूल की लिपियों के अतिरिक्त अन्य लिपियों में अक्षर तो होते हैं, किंतु वर्ण नहीं होते हैं। केवल देवनागरी लिपि तथा भारतीय मूल की कुछ अन्य लिपियों में वर्ण की अवधारणा है। 'L' के नाम में 'ऐ' 'ल्' एवं 'अ' तीन वर्ण हैं । जबकि देवनागरी लिपि की वर्णमाला का प्रत्येक अक्षर केवल एक वर्ण को प्रदर्शित करता है।

प्रत्येक वर्ण की एक सुनिश्चित ध्वनि

इसकी अगली महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक विशेषता यह है कि इसके प्रत्येक वर्ण की ध्वनि एक सुनिश्चित ध्वनि है।अपनी इस विशेषता के कारण ही यह श्रव्य सङ्गणक (audio computer) एवं श्रव्य मुद्रक सङ्गणक (audio printer computers) अर्थात केवल सुनकर मुद्रण करने वाले कम्प्यूटर्स के लिए श्रेष्ठ लिपि है।

देवनागरी की वैज्ञानिकता-

विश्व की समस्त भाषाओं को शुद्धतापूर्वक व्यक्त करने की क्षमता

देवनागरी लिपि की एक अन्य विशेषता यह है कि इसकी मूल वर्णमाला में संस्कृत के समस्त शब्दों के शुद्धतापूर्वक उच्चारण करने की क्षमता थी, परंतु देश, आहार (खान-पान), जलवायु व अन्य परिस्थितियों के कारण अन्य भाषाओं में कुछ ऐसे उच्चारण व्याप्त हैं, जिनको हम मूल वर्णमाला के वर्णों के माध्यम से व्यक्त नहीं कर सकते हैं।

वर्णमाला में प्रत्येक वर्ण का विज्ञान सम्मत सुनिश्चित स्थान

इस लिपि की ऊपर वर्णित विशेषताओं से भी अधिक महत्त्वपूर्ण विशेषता इसकी वर्णमाला में प्रत्येक वर्ण द्वारा पाए जाने वाला स्थान है। उदाहरणार्थ 'अ' के पश्चात 'आ' क्यों आया, 'आ' के पश्चात 'इ' क्यों आई और 'ई' क्यों आई? इसी प्रकार 'क' के पश्चात 'ख' क्यों आया, 'ख' के पश्चात 'ग' क्यों आया?